ब्राह्मी लिपि : उद्भव एवं विकास

आनन्द शर्मा
लिपि विशेषज्ञ
पाण्डुलिपि एवं लिपि विज्ञान विभाग
विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, जयपुर

ब्राह्मी लिपि भारतवर्ष की सबसे प्राचीनतम लिपि है जो पूर्णतः पढ़ी जा सकी है। दक्षिण एशियायी क्षेत्र की अधिकांश लिपियों की जननी ब्राह्मी लिपि है। यह लिपि हमें सर्वप्रथम कश्मीरी एवं मौर्यकालीन अभिलेखों में बायें से दायें लिखी हुई देखने को मिलती है। ये अभिलेख पहाड़ियों की चट्टानों, शिलास्तम्भों और शिलाफलकों पर उत्कीर्ण हैं।

भारतवर्ष में पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण तक इस लिपि में लिखे हुए लेख आज भी विद्यमान हैं, जो इसकी सर्वव्यापकता के परिचायक हैं। जबसे इस लिपि का उद्वाचन हुआ है, यह सिद्ध हो गया है कि भारतीय उपमहाद्वीप सहित दक्षिण-पूर्व एशिया, श्रीलंका तथा तिब्बत आदि देशों की लिपियाँ भी देवानां प्रिय, जनानां प्रिय, प्रियदर्शी, सम्राट अशोक के शिलालेखों में प्रयुक्त ब्राह्मी लिपि से ही उद्भूत हुई हैं।

यद्यपि अशोक के लेखों में कहीं भी इस लिपि का ब्राह्मी के रूप में नामोल्लेख नहीं हुआ है, तथापि जार्ज ब्यूलर, डॉ. राजबली पाण्डेय आदि प्रसिद्ध पुरातत्त्वविदों का मानना है, कि इस लिपि को ब्राह्मी नाम दिया जा सकता है, क्योंकि अधिकांश भारतीय साहित्य में उद्भृत लिपियों की सूची में ब्राह्मी को ही प्रथम स्थान दिया गया है। समय के साथ-साथ इस लिपि में काफी परिवर्तन भी हुए। एक समय ऐसा भी आया जब इस लिपि को पढने-लिखने वाले ही नहीं रहे और यह मात्र शिलाओं, ताम्रपत्रों, लोहस्तम्भों, मृत्पात्रों अथवा सिक्कों पर ही लिखी रह गयी। बड़े से बड़े विद्वान भी 7वीं-8वीं शताब्दी तक की लिपियाँ ही पढ़ पाते थे, लेकिन इससे पूर्व-काल की लिपि को पढ-पाना उनके लिए असंभव था। कहा जाता है कि ई.सन् 1356 में फिरोजशाह तुगलक ने जब मेरठ और दिल्ली-टोपरा के अशोक स्तंभों को दिल्ली मँगवा कर उन्हें पढ़ने के लिए विद्वानों की सभा में रखवाया, तो कोई भी विद्वान उन्हें पढ़ नहीं पाया। मुगल सम्राट् अकबर को भी इन लेखों का अर्थ जानने की जिज्ञासा थी। वह इन लेखों में उत्कीर्ण प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विषयक गूढ रहस्य को जानना चाहता था, परन्तु उसे भी ऐसा कोई विद्वान् नहीं मिला, जो उन लेखों को पढ़ कर अर्थ समझा सके।

ई.सन् 1784 में जब 'एशियाटिक सोसायटी ऑफ बंगाल' की स्थापना हुई तब भारतीय प्राचीन इतिहास, शिल्प एवं लिपि-विज्ञान में रुचि रखने वाले विद्वानों को प्रोत्साहन एवं पुनर्बल मिला, उन्होंने इन प्राचीन लिपिबद्ध लेखों को पुनः पढने का प्रयास शुरू किया। ई.सन् 1835-37 में इस लिपि को सर्वप्रथम पढने का श्रेय पाश्चात्य पुरातत्त्वविद सर-जॉन-प्रिंसेप को जाता है, जिन्होंने दस वर्ष तक अथक प्रयास कर आखिरकार इस लिपि के सभी अक्षरों को पढने में सफलता

प्राप्त की और एक सर्वमान्य वर्णमाला का संकलन हुआ। इसके बाद ब्राह्मी लिपिबद्ध लेखों को एक के बाद एक आसानी से पढा जाने लगा।

गुजरात में ब्राह्मी लिपि का सबसे प्राचीन प्रारूप मौर्य सम्राट अशोक के गिरनार शिलालेख में प्राप्त होता है जो ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी का है। अशोककालीन शिलालेखों की प्रचुरता से सिद्ध होता है कि मौर्यकाल में इस लिपि का उत्तरी भारत तथा लंका में अत्यधिक प्रचार था। सम्राट अशोक ने इन लेखों में तत्कालीन राजाज्ञा, धर्म संबंधी नीति-नियम तथा अहिंसा प्रचारक उद्घोषों को उत्कीर्ण कराया और इसे 'धम्मलिपि' की संज्ञा दी। जैन आगम ग्रन्थ 'पञ्जवणासुत्त' तथा 'समवायांगसुत्त' में अठारह लिपियों का उल्लेख मिलता है, जहाँ इस लिपि का 'बंभी लिवी' के रूप में नामोल्लेख हुआ है। अठारह लिपियों की नामावली में ब्राह्मी लिपि का नाम सबसे पहले है। बौद्ध ग्रन्थ 'ललितविस्तर' में 64 लिपियों का नामोल्लेख हुआ है, जिनमें 'ब्राह्मी' तथा 'खरोष्ठी' लिपियों का नाम सर्वप्रथम है। जैन आगम 'भगवतीसूत्र' में भी प्रारंभ में ही 'नमो बंभीए लिवीए' कहकर इस लिपि की वंदना की गयी है। अतः कहा जा सकता है कि इसका एक नाम 'बंभी' लिपि के रूप में प्रचलित था और उस समय इसका बहुत आदर था। खरोष्ठी लिपि के अक्षर चित्रात्मक होने के कारण इन्हें सही सही पढ़-पाना अति कठिन और भ्रामक रहा होगा, अतः इसका प्रचलन अधिक नहीं हो पाया। दूसरा एक और प्रमुख कारण यह भी रहा, कि यह लिपि अर्बीपर्सियन लिपियों की तरह दायें से बायें लिखी जाती थी, जिसका अनुकरण संभवतः भारतीय पण्डितों के लिए कठिन रहा होगा। आज भी इस लिपि में उत्कीर्ण लेखों को पढ़ने में पुरातत्त्वविद प्रयासरत हैं, लेकिन ब्राह्मी जैसी सफलता प्राप्त नहीं हो सकी है। भारतवर्ष में प्राप्य प्राचीनतम लिपि अशोक-कालीन ब्राह्मी लगभग 300 ई.पू. की है। यद्यपि पिपरावा का मटके पर लिखा हुआ लेख तथा बडली का खण्ड लेख 400-500 ई.पू. के, हडप्पा तथा मोहनजोदडो की मुद्राएँ 1000 ई.पू. की तथा हैदराबाद संग्रहालय के बर्तनों पर उत्कीर्ण 5 चिह्न संभवतः 2000 ई.पू. के भी पाए गए हैं, जिनमें मात्राएँ स्पष्ट हैं और अशोककालीन लिपि के सदृश हैं, परन्तु बोधगम्य न होने के कारण इनसे अभी तक कोई महत्त्वपूर्ण परिणाम प्राप्त नहीं हो सका है।

ब्राह्मी लिपि नामकरण अवधारणा

ब्राह्मी लिपि के उद्भव एवं नामकरण की जब चर्चा करते हैं, तो हमें प्रमुखरूप से दो विचारधाराएँ दिखायी पड़ती हैं- (1) वैदिक और (2) जैन। (1) वैदिक परंपरानुसार इस लिपि के सर्जक परम पिता परमेश्वर देवाधिदेव ब्रह्मा हैं, जिन्होंने सृष्टि-रचना के समय इस लिपि की रचना की और उनके नाम पर ही इस लिपि का ब्राह्मी नाम पड़ा । एक मान्यता ऐसी भी है कि प्राचीनकाल में लिखने-पढ़ने का काम ब्राह्मण करते थे, अतः ब्राह्मण शब्द से इस लिपि का नाम ब्राह्मी पड़ा। (2) जैन परंपरा के अनुसार प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की दो पुत्रियाँ थीं- ब्राह्मी और सुन्दरी। ऋषभदेव ने ही विश्व को सर्वप्रथम असि-मसि-कृषि का सिद्धान्त दिया। उन्होंने मसि सिद्धांत के तहत अपनी बड़ी बेटी ब्राह्मी को यह लिपि सिखायी, अतः इस लिपि का नाम ब्राह्मी पड़ा।

ब्राह्मी लिपि की विशेषताएँ

1. ब्राह्मी लिपि भारतवर्ष की सबसे प्राचीन लिपि है।

2. अधिकांश भारतीय उपखंड की लिपियाँ इसी लिपि से उद्भूत हुई हैं। अतः ब्राह्मी को समस्त लिपियों की जननी कहा जाता है।

3. इस लिपि का ज्ञान भारतवर्ष में प्रचलित अन्य प्राचीन लिपियों को सरलता पूर्वक सीखने-पढ़ने एवं ऐतिहासिक तथ्यों को समझने में अतीव सहायक सिद्ध होता है।

4. यह लिपि अपने समय की सर्वमान्य लिपि होने के कारण इसे राजाश्रय प्राप्त था।

5. वैदिक-जैन-बौद्ध आदि धर्मग्रन्थों का आलेखन सर्व प्रथम इसी लिपि में हुआ और इसे अन्य लिपियों की तुलना में अग्रक्रम में रखा गया।

6. यह लिपि शिलापट्टों अथवा ताम्रपत्र-लोहपत्र आदि पर नुकीली कील द्वारा खोद कर बायें से दायें लिखी जाती थी।

7. ब्राह्मी लिपि में शिरो-रेखा नहीं होती है, जो इसकी अपनी विशेषता है। ग्रंथ एवं गुजराती आदि लिपियाँ भी शिरोरेखा के बिना ही लिखी जाती हैं, लेकिन शारदा, नागरी आदि लिपियों में शिरोरेखा का प्रचलन है।

8. इस लिपि में अधिकांशतः समस्त उच्चरित ध्वनियों हेतु स्वतन्त्र एवं असन्दिग्ध चिह्न विद्यमान हैं, अतः इसे पूर्णतः वैज्ञानिक लिपि कहा जा सकता है।

9. अनुस्वार, अनुनासिक व विसर्ग हेतु स्वतन्त्र चिह्न प्रयुक्त हुए हैं, जो आधुनिक लिपियों में भी यथावत स्वीकृत हैं।

10. व्याकरण-सम्मत उच्चारण स्थान के अनुसार वर्गों का ध्वन्यात्मक विभाजन भी इसमें प्राप्त होता है।

11. इस लिपि का प्रत्येक अक्षर एक ही ध्वनि का उच्चारण प्रकट करता है, जो समझने में सरल और पूर्ण रूप से वैज्ञानिक है।

12. इस लिपि में अक्षरों का आकार समान व शलाका प्रविधि से अंकित करने का विधान मिलता है।

13. इस लिपि में अक्षरों की बनावट अत्यन्त सरल है। समस्त अक्षर सरल ज्यामितिक चिह्नों द्वारा निर्मित हैं।

14. इस लिपि में मात्राओं के लिए अलग-अलग चिह्न प्रयुक्त हुए हैं, जो अक्षर के ऊपर या नीचे बायें अथवा दायें लगे हुए मिलते हैं।

15. इस लिपि में दीर्घ मात्राओं का प्रयोग अत्यन्त अल्प हुआ है।

16. इस लिपि में संयुक्त अक्षरों का प्रयोग बहुत कम हुआ है।

17. विशेषतः संयुक्ताक्षर लिखते समय जिस अक्षर को पहले बोला जाए, उसे ऊपर और बाद में बोले जाने वाले अक्षर को उसके नीचे लिखा जाता था। अर्थात् ब्राह्मी लिपि में संयुक्त अक्षर एक-दूसरे के नीचे लिखे जाते थे। ग्रंथ लिपि में भी इसी पद्धति का अनुसरण किया गया है। प्राचीन-नागरीलिपिबद्ध पाण्डुलिपियों में भी कुछ संयुक्ताक्षर इसी प्रकार ऊपर से नीचे की ओर लिखे हुए मिलते हैं।